पाठ 20

मिनी महात्मा

– श्री आलम शाह खान

गाँधी जी के इस कथन "अत्याचार को सहना अत्याचार को बढ़ावा देना है" को आत्मसात करती इस कहानी का मुख्य पात्र मोहन पुलिस अधिकारी की ज्यादती का शांतिपूर्ण परंतु दृढ़ विरोध करता है। अपने निश्चय पर अटल मोहन के प्रतिकार के समक्ष पुलिस अधिकारी को अपनी गलती सार्वजनिक रूप से स्वीकार करते हुए खेद व्यक्त करनी पड़ती है। प्रस्तुत कहानी न सिर्फ किशोरवय बालक की दृढ़ता और प्रतिकार की शक्ति को अभिव्यक्त करती है। बल्कि यह कहानी संबंधों के सौहार्द को भी बनाए रखने का प्रयास करती है।

बात जरा–सी थी पर मोहन था कि रोए चला जा रहा था। लोग समझा–समझाकर थक गए कि बड़े छोटों को पीटते चले आए हैं, अगर 'पुलिस अंकल' ने उसके एक चपत लगा भी दी तो क्या हो गया? कौन सा पहाड़ टूट पड़ा उस पर? बड़े हैं, पड़ोसी हैं–प्यार भी करते हैं, अच्छे–बुरे में भी काम आते हैं, पर वह अब रोते–रोते मुँह बिसूरने लगा था, उसकी हिचकियाँ बँध गईं।

''अरे भाई, बड़े हैं, जरा जल्दी होगी, किसी ने उन्हें नहीं टोका। एक तुम्हीं उनके आड़े आ गए।''

''क्योंकि उनकी गलती थी। बड़ों ने नहीं टोका उन्हें और मैंने टोक दिया तो मुझे पीट दिया, क्यों? कोई बड़ा उन्हें रोकता टोकता तो क्या वह उसके चाँटा जड़ देते? नहीं तो मुझे इसलिए पीट दिया कि मैं बच्चा हूँ, छोटा और कमजोर हूँ ....।''

लोग भी तरह–तरह की बातें कर रहे थे–

''लड़का जिरह किए जाता है, इसे कौन समझाए?''

''रोता है, रोने दो – कब तक रोएगा?''

''अभी थककर आप चुप हो जाएगा।''

''चलो जी, चलो .... सब–इंस्पेक्टर साहब आप भी चलें ..... सुबह–ही–सुबह रोनी सूरत सामने पड़ी। छुट्टी का दिन न बिगड़ जाए।'' इतना कह–सुनकर दूध के बूथ के आगे खड़े लोग बिखर गए। दूध खत्म होने पर दूधवाला भी बूथ बंद कर चला गया। पर वह वहीं खड़ा रोता रहा–रोता रहा; टस–से–मस न हुआ। सूरज की किरणें चमकने पर भी जब वह घर न पहुँचा तो उसकी माँ ने इधर–उधर पूछा। पड़ोस के गुल्लू ने सारी बातें बतलाईं। सुनकर माँ उस बूथ के पास गई, तो वह उनसे लिपट गया। हिचकियाँ भरकर रोने लगा। माँ ने भी वही कहा, जो सबने कहा था।''अरे बेटा! बड़े हैं, बाप बराबर, तनिक चपतिया दिया तो क्या हो गया? कौन तीर तान दिया? चुप भी हो जा अब।''

''मार दिया तो कुछ नहीं, बड़े हैं, और मार दें, पर मेरा कसूर तो बताएँ। बप्पा को कारखाने में यूनियनवालों ने मारा; वे अस्पताल में पड़े हैं। उनका कोई कसूर होगा, पर मुझे क्यों मारा। मेरी क्या गलती थी, क्या कसूर था?''

''अब जिद मत कर, तूने दूध भी नहीं लिया .... तेरे बप्पा को अस्पताल नाश्ता देने जाना है, तुझे याद नहीं?''

''मैं नहीं जाऊँगा। कहीं नहीं जाऊँगा। जाऊँगा तो पुलिस अंकल के घर।''

''मान भी जा बेटे, मैं उनसे कह दूँगी कि आगे से ऐसा सुलूक न करें बच्चों के साथ।''

''पर जो दो चाँटे मुझे जड़ दिए, उनका क्या?''

''उनका क्या? अब चुप भी हो ले, नहीं तो मैं भी लगा दूँगी, चल।''

''तो तुम भी क्यों चूको, लगा दो।''

''मैं कहती हूँ घर चल। अस्पताल जाना है, अब उठ भी।''

''मैं नहीं आता, पुलिस अंकल के घर जाकर पूछूँगा उनसे कि मेरा कसूर बताइए।''

''नहीं आता तो जा मर कहीं।'' इतना कह माँ सिर पर पल्ला ढँककर वहाँ से चल दीं।

ट्रिन .... ट्रिन .... ट्रिन घंटी घनघनाई। थोड़ी देर बाद दरवाजा खोला तो पाया– भीगी आँखें लिए, सामने मोहन खड़ा है। उसे देखकर शेरसिंह सकपकाए।

''अंकल! आपने मुझे क्यों मारा? मेरा कसूर क्या था?'' सुबकते हुए उसने वही सवाल पूछा।

''किसने मारा? किसको? मैं कुछ नहीं जानता।''

''आपने मारा मुझे। आखिर क्यों मारा?''

''जा, मारा तो मारा। दफा हो जा यहाँ से, नहीं तो और पिट जाएगा। चल खिसक।'' वे गरजे।

''मारो .... और मारो, पर मैं नहीं जाऊँगा, जब तक आप यह नहीं बताएँगे कि मेरा कसूर क्या था....'' वह भी कड़ककर बोला। अब आसपास के घरों की मुँडेरों से दस–पाँच चेहरे उभर आए। देखा, बरामदे के सामने मुँह बिसूरता मोहन खड़ा है और अपने बरामदे में झल्लाए, शेरसिंह।

''जाएगा भी यहाँ से, या दो–एक चपत खाकर ही टलेगा।''

''आप जो चाहें करें। जब तक मेरा कसूर नहीं बताएँगे, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।''

''अजीब उजड्ड–ढीठ लड़का है।'' एक पड़ोसी ने कहा।

''देखिए, आप इसे समझाएँ; अगर यहाँ से दफा नहीं हुआ तो मैं इसे कोतवाली में बंद करवा दूँगा,'' शेरसिंह गरजे।

''आप जो चाहें सो करें, पर मेरा कसूर बताएँ, जिससे मैं आगे ऐसा कुछ न करूँ कि बड़ों को मुझ पर हाथ उठाना पड़े?' मोहन बोला।

''अभी तो बस तू इतना कर कि यहाँ से दफा हो जा। नहीं तो...'' वे भन्नाए। ''सच, पड़ोस का लिहाज है, वरना इस बच्चू को वह सबक सिखाता कि...'' 'शेरसिंह कुढ़कर बोले। परसों ही वे नायक से तरक्की लेकर असिस्टेंट सबइंस्पेक्टर बने थे।

''मैं सबक सीखने ही आया हूँ। आप मुझे बताएँ कि कतार तोड़नेवाले को टोकना कोई पाप है?''

''यार, इस लड़के पर कौन–सा भूत सवार है? किसी भी तरह नहीं मानता।' इतना कहकर शर्मा जी नीचे उतरे। वर्मा जी भी साथ आए और उसे पुचकारकर दिलासा देते बोले, 'बहुत हो गया, बेटे मोहन! अब छोड़ो भी और घर चले जाओ।'

''आप सच मानें, मेरी हेठी नहीं हुई, अगर अंकल ने पीट दिया.... और लगा दें दो–चार पर बताएँ तो कि आखिर क्यों मारा मुझे? ....''

''कुत्ते की दुम, टेढ़ी की टेढ़ी। कहा न भाई बड़े हैं।''

''बड़े तो आप सब हैं। सभी पीट दें, मैं कुछ नहीं बोलूँगा। लेकिन इतना बताएँ कि क्यों? सिर्फ इसलिए कि मैं छोटा हूँ, कमजोर हूँ।''

''नहीं–नहीं यह बात नहीं। तुमसे कोई बदतमीजी हुई होगी। इसलिए, बस।''

''तो यह बता दें कि क्या बदतमीजी हुई?''

''जा, जा कुछ नहीं हुआ। पीट दिया हमने, कर ले जो कुछ करना हो;'' अब शेरसिंह के भीतर बैठा पुलिसवाला बोला।

''ठीक है, तो मैं यहीं बैठा हूँ। आपके फाटक के बाहर।''

''बैठ या मर, हमारी बला से;'' शेरसिंह ने कहा। तभी उनकी घरवाली बाहर आई और उसने सामने खड़े लोगों के हाथ जोड़कर वहाँ से जाने को कहा और मोहन की बाँह थाम भीतर ले गई।

''अब बोल बेटा! क्या गजब हो गया? अगर इन्होंने एक–आध लगा भी दी, तो क्या हुआ? जैसे हमारी अमरित, वैसा तू। चल मुँह धो, कुल्ला कर और नाश्ता कर ले, उठ!''

''आंटी! आपकी बात सर आँखों पर .... पर अंकल बताएँ तो?''

''अब क्या बताएँ ..... समझ ले कि गुस्सा आ गया।''

''तो बस, बाहर पाँच पड़ोसियों के सामने यही कह दें।''

''भई, तू तो बहुत जिद्दी है, इससे क्या हो जाएगा?''

''मुझे तसल्ली हो जाएगी कि मैंने ठीक काम किया था।''

''मैं कहती हूँ कि तुमने गलती नहीं की, ठीक किया।''

''आपने कहा, माना .... पर पीटा तो अंकल ने, सबके सामने।''

''अजी सुनते हो, सुबह–सवेरे क्या महाभारत रचा बैठे। कह दो कि ठीक था मोहन, बस गुस्से में पीट दिया।''

''बस, बस रहने दो अपनी भलमनसाहत। यह नाचीज मुझे अपने घर में, अपने बच्चों के सामने, अपमानित करना चाहता है,'' शेरसिंह गुर्राए।

''इसमें क्या हुआ जो हेठी होती है आपकी?''

''तुम रुको, मैं इसे अभी धक्के मार–मार बाहर कर देता हूँ।'' इतना कहकर शेरसिंह आगे बढ़े।

''आप क्यों हलाकान होते हैं अंकल, मैं खुद ही चला जाता हूँ आपके घर से।'' मोहन ने इतना कहा और हाथ जोड़कर बाहर आ गया, पर गया नहीं। फाटक पर ही घुटनों में सिर रखकर बैठ गया।

उधर वह पुलिस की नई वर्दी पहनकर तैयार होने लगे।

''सुनिए, वह लड़का अभी तक फाटक पर डटा है, कह दो कि गुस्सा आ गया था। क्यों जगत में डंका पिटवाते हो कि बित्ते–भर का छोकरा थानेदार के दर्जे के सरकारी अफसर के

दरवाजे पर सत्याग्रह किए बैठा है। कहीं अखबारवालों को भनक पड़ गई तो तिल का ताड़ बनेगा। फिर आज गांधी जयंती भी है।''

''क्या कहती हो, उसके आगे गिड़गिड़ाऊँ, कहूँ कि मेरे बाप बख्शो....।'' तभी 'सबको सन्मति दे भगवान, ईश्वर–अल्लाह तेरे नाम' की गूँज सुनाईं दी। खिड़की से झाँका, तो देखा–लड़के झंडे और तख्तियाँ उठाए प्रभातफेरी पर निकले हैं। असिस्टेंट सबइंस्पेक्टर भीतर खड़े थे और मोहन बाहर उनके फाटक पर डटा था, तभी लड़कों की टोली आ पहुँची। वहाँ अपने साथी को गठरी बना बैठे देखा, तो सब वहीं रुक गए।

''क्या हुआ?''

''मोहन यहाँ?''

''क्यों बैठा है?''

''चलो, इसे भी साथ लो, इसे भी तो एक तख्ती बनानी थी।''

''चलो मोहन, प्रभातफेरी में। यहाँ बैठे क्या कर रहे हो?'' आगे वाले बड़े लड़के ने उसे बाँह थामकर उठाया, तो देखा, उसकी आँखें सूजकर लाल हो गई हैं और अभी भी उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं।

''अरे क्या हुआ इसे?'' सभी के मुँह से निकला।

तभी एक लड़के ने, जो सुबह दूध लेने आया था, सारी बात बताई और कहा कि मोहन सुबह से इस बात पर अड़ा है कि अंकल बताएँ उसने ऐसा क्या कसूर किया था, जो उन्होंने उसे पीट दिया। सब समझाकर हार गए, पर यह यहाँ से टलता ही नहीं।

''मोहन ! तुम्हारी तख्ती का पन्ना कहाँ है ? कल तो हेकड़ी बघार रहे थे कि गांधी जी की वह बात चुनूँगा कि ...।

''वह तो यह रहा, लो पढ़ो,'' कहकर मोहन ने एक कागज आगे बढ़ा दिया। उस पर लिखा था –''अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है।''

''ठीक है, गाँधी जयंती पर गांधी जी की एक बात को सही करके दिखाएँ।'' इतना बोल एक बड़े लड़के ने तिरंगा ऊँचा करते हुए जोर से कहा – ''दोस्तो! अंकल को सफाई तो देनी ही होगी। हम सब यहीं रुकें। बोलो–महात्मा गांधी की जय। .... अंकल, बाहर आइए....।'' और आस–पास ऐसे ही नारे गूँजने लगे।

अब तो मोहल्ले भर के लोग भी वहाँ जमा हो गए। नारे गूँजते रहे। मोहन हाथ जोड़कर फाटक के आगे खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद बाबा फरीद फाटक खोलकर भीतर गए और शेरसिंह जी के साथ बाहर आए। फिर सबको स्नेह से देखते हुए बोले, ''प्यारे बच्चो! सुनो, अंकल तुमसे कुछ कहना चाहते हैं'', इतना कहकर वे पीछे हट गए।

अब सामने पुलिस अंकल आए और कहने लगे, ''अच्छा बच्चो! आज सुबह मुझसे एक ज्यादती हो गई। मैं अत्याचार कर बैठा। गुस्से में मैंने मोहन पर हाथ उठा दिया। कसूर मेरा ही था। मैं शर्मिन्दा हूँ।'' इतना सुनना था कि मोहन ने आगे बढ़कर अंकल के चरण छुए और जोर से नारा लगाया, ''अंकल, जिन्दाबाद!''

शब्दार्थः– **जिरह**–बहस, पूछताछ, फेरबदल कर बार–बार एक ही प्रश्न को पूछना, **हेठी**–अपमान, प्रतिष्ठा में कमी, तौहीनी, **मुंडेरों**– दीवार का वह ऊपरी भाग जो सबसे ऊपर की छत के चारों ओर कुछ–कुछ उठा हुआ होता है, **बिसूरना**–मन में दुःख मानना, **हेकड़ी**–डींग हाँकना, बढ़ चढ़कर बातें करना, **तनिक**–थोड़ा, अल्प, **चपतिया**–झापड़ मारना, चपत लगान **सलूक**–व्यवहार, बर्ताव, **दिलासा**–तसल्ली, ढाढ़स, सांत्वना।

अभ्यास

पाठ से

1. वह जरा सी बात क्या थी, जिसकी वजह से मोहन लगातार रोये जा रहा था ?
2. ''जा–जा कुछ नहीं हुआ। पीट दिया हमने। कर ले जो कुछ करना हैं ! अब शेर सिंह के भीतर बैठा 'पुलिसवाला' बोला'' इस कथन में 'पुलिसवाला' लिखने के पीछे लेखक का क्या भाव है ?
3. सबके समझाने के बाद भी मोहन घर क्यों नहीं जा रहा था ?
4. शेर सिंह की पत्नी ने लोगों से क्या और कैसे कहा ?
5. मोहन ने अपने व्यवहार में विरोध को शामिल कर साबित किया कि अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है। कैसे ?
6. 'लड़का जिरह किए जाता है। इसे कौन समझाए?' लोग किस आधार पर ऐसा कह रहे थे?
7. इस पाठ में कुछ वाक्य ऐसे हैं जिनमें बालकों की बात पर ध्यान न देने का भाव छिपा है। ऐसे चार वाक्य पाठ में से छाँटकर लिखिए।
8. 'बात 'मान भी जा बेटे! **मैं उनसे** कह दूँगी, आगे से ऐसा सुलूक न करें बच्चों के साथ।' लिखिए इस वाक्य में–
   – **'मैं'** किसके लिए आया है ?
   – **'उनसे'** किसके लिए आया है ?
   – 'ऐसा सुलूक' कहकर किस सुलूक की बात कही गई है ?
   – 'मान भी जा बेटे' में कौन–सा भाव छिपा है ?
9. कहानी में आए निम्नलिखित पात्रों के बारे में आपने जो राय बनाई हो, उसे पात्रवार चार–पाँच पंक्तियों में लिखिए।

पाठ से आगे

AH123U

1. फरीद बाबा के व्यक्तित्व का वह कौन सा पहलू है जिसके माध्यम से उन्होंने झगड़े को आसानी से सुलझा दिया। हर समाज में इस तरह के लोग होते हैं। अपने आस–पास के ऐसे लोगों के बारे में समूह में चर्चा कर उनके मानवीय पहलुओं को लिखिए।
2. मोहन सच्चाई पर अड़ा रहा और अंत में उसकी विजय हुई। शेर सिंह को अपनी गलती को स्वीकार करना पड़ा। क्या आपने अपने आस–पास में ऐसी कोई घटना देखी या सुनी है जिसमें सच्चाई की जीत हुई हो। अपना अनुभव लिखिए।
3. मिनी महात्मा' शीर्षक कहानी में मोहन ने महात्मा गाँधी के किन सिद्धांतों का पालन किया? अपने मित्रों से बात कर लिखिए।
4. कतार में लगकर कोई भी सामान लेने के क्या फायदे और नुकसान आपको लगते हैं। अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।
5. फरीद बाबा ने पुलिस अंकल को भीतर जाकर क्या समझाया होगा, जिसे सुनकर पुलिस अंकल अपनी गलती स्वीकार करने आ गए ?
6. इस कहानी को पढ़कर आपकी क्या राय/समझ बनती है? लिखिए।
7. मोहन के प्रति शेरसिंह ने जो दुर्व्यवहार किया था, मोहन उसका विरोध गाँधी जी द्वारा सुझाए गए मार्ग पर चलकर कर रहा था। महात्मा गाँधी जी द्वारा इस संबंध में क्या मार्ग सुझाया गया था? मोहन द्वारा किए जा रहे उक्त व्यवहार से आप कहाँ तक सहमत हैं? लिखिए।

भाषा से

AH9X5H

1. पाठ में 'सर आँखों पर' तथा 'पहाड़ टूटना' जैसे मुहावरों का प्रयोग हुआ है, इसी प्रकार 'कुत्ते की दुम, टेढ़ी की टेढ़ी' लोकोक्ति भी आई है।

कोई भी ऐसा वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे, वह मुहावरा कहलाता है। जबकि लोकोक्ति लोक–अनुभव से बनती हैं । किसी समाज ने जो कुछ अपने लंबे अनुभव से सीखा है उसे एक वाक्य में बाँध दिया है। ऐसे वाक्यों को ही लोकोक्ति कहते हैं। इसे कहावत, जनश्रुति आदि भी कहते हैं। मुहावरा वाक्यांश है और इसका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता। लोकोक्ति संपूर्ण वाक्य है और इसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है। जैसे–'होश उड़ जाना' मुहावरा है। 'बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी' लोकोक्ति है। अब आप पाँच मुहावरे

और पाँच लोकोक्ति खोज कर लिखिए और उनका अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिये।

2. इन शब्दों को देखें – लम्बाई, चतुराई, बुढ़ापा, नम्रता, मिठास, समझ, चाल, दूरी, मनाही, निकटता इत्यादि। जिस नाम या संज्ञा से पदार्थ में पाए जाने वाले किसी धर्म अवस्था, गुण दोष का बोध हो वह, भाववाचक संज्ञा है। पाठ में आए निम्न शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए – ईमानदार, बेईमान, खराब, सफेद कमजोर, चालाक।
3. पाठ आधारित कुछ शब्द दिए जा रहे हैं जिनके अनुस्वार व अनुनासिक हटा दिए गए हैं। निम्नांकित दिए गए शब्दों में अपनी समझ के अनुसार अनुनासिक लगाएँ– उदाहरण पाँच, मुह, डाका, हसना, आख, गाधी, आसु, अकल, हू, गूज, मच, तखितया।
4. निम्न शब्द दो–दो पदों के योग से बने हैं। उन पदों को अलग–अलग करके लिखिए। महात्मा, धर्मात्मा, पुण्यात्मा, परमात्मा, पापात्मा।
5. 'बड़ा' या 'बड़े' शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है। भिन्न–भिन्न अर्थों में इसका प्रयोग कीजिए और अर्थ भी लिखिए।
6. नीचे लिखे वाक्यों में कोष्ठक में अंकित मूल क्रिया का सही रूप बनाकर रिक्त स्थान भरिए–

(क) स्कूल की घंटी .....। मंदिर में घंटा .....। (बजाना)
(ख) हम गाँधी जयंती .....। बच्चे बाल दिवस .....। (मनाना)
(ग) प्रधानजी ने झंडा .....। अध्यापक ने झंडियाँ .....। (फहराया)
(घ) घर में भाई .....। घर में बहन .....। (आना)

योग्यता विस्तार

AHIT75

1. पाठ का नाम 'मिनी महात्मा' है। 'मिनी' अंग्रेजी शब्द है जिसका अर्थ है 'छोटा'। पाठ में भी इसी आशय से मिनी शब्द का प्रयोग किया गया है। पाठ में और भी कई अंग्रेजी शब्द आए हैं। उन्हें खोज कर इस तरह से वाक्य में प्रयोग करते हुए लिखिए ताकि उनका अर्थ भी स्पष्ट हो सके।
2. राष्ट्रपिता ने कहा था कि "अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है" गाँधी जी द्वारा कहे गए इस प्रकार के अन्य कथनों को ढूँढ़ कर लिखिए और उन पर साथियों से चर्चा कीजिए।
3. आपने किन–किन मौकों और स्थानों पर लोगों को कतारबद्ध देखा है, इसके क्या फायदे हैं? इनपर आपस में बातचीत करते एक सूची बनाइए।
4. विरोध–प्रदर्शन के दो तरीके होते हैं एक लड़ाई–झगड़ा करके, दूसरा शान्ति से। आपको दोनों तरीकों में कौन–सा उचित लगता है?